।। श्री शांतिनाथाय नमः ।।

विश्वशान्ति विधान

श्री सिद्धक्षेत्र आहार जी के
शान्तिनाथ भगवान

श्री दि. जैन अतिशय क्षेत्र सेरोंन जी के
शान्तिनाथ भगवान

रचयिता : सारस्वत कवि आचार्य विभवसागर

श्री 108 कुन्द-कुन्द स्वामी

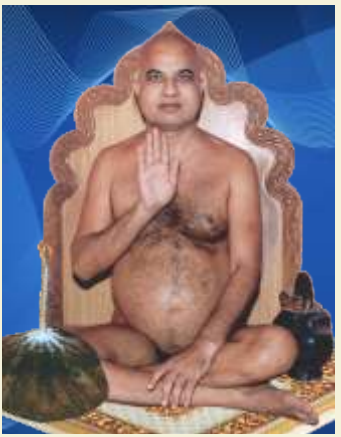

परम पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागरजी महाराज

सारस्वत कवि आचार्य श्री विभवसागर जी महाराज

मुनि श्री आचरणसागरजी

क्षु. श्री अध्यात्मसागरजी

विश्वशान्ति विधान

रचयिता

सारस्वत कवि आचार्य विभवसागर

पुण्यार्जक

कु. हर्षी जैन के जन्मोत्सव पर

दादा-दादी : श्रीमती मीना जैन धर्मपत्नी श्री अरविन्द जैन

पापा-मम्मी : श्रीमती अतिशा जैन धर्मपत्नी श्री अभिषेक जैन

चाचा : श्री अनुरोध जैन

पता : ७९, गोमती कॉलोनी, भोपाल. मो. : ०९४२४७९६६२२

कृति	:	विश्वशान्ति विधान
रचयिता	:	सारस्वत कवि आचार्य विभवसागर
शुभाशीष	:	प.पू. गणाचार्य, श्री विरागसागरजी महाराज
सम्पादक	:	पं. सनतकुमार, विनोदकुमार जैन रजवांस, सागर (म.प्र.)
संस्करण	:	नवम्, दिसम्बर, २०१३, ११०० प्रतियां
मूल्य	:	स्वाध्याय
मुद्रक	:	विकास आफसेट प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स, ४५, सेक्टर-एफ, औद्योगिक क्षेत्र, गोविन्दपुरा, भोपाल (म.प्र.) फोन : ०७५५-२६०१९५२, ०९४२५००५६२४

विषय - सूची

क्र.	विषय		लेखक	पृ. क्र.
१.	प्रस्तावना	:	आचार्य विभवसागर	५
२.	पुरोवाक्	:	सुरेश जैन 'सरल' जबलपुर	७
३.	सम्पादकीय	:	पं. सनतकुमार विनोदकुमार जैन	१०
४.	मेरी अनुभूति	:	मुनि आचरणसागर	१२
५.	शान्ति जिनस्तवन	:	आचार्य समन्तभद्र स्वामी	१४
६.	शान्त्यष्टक	:	आचार्य पूज्यपाद स्वामी	१५
७.	शान्ति भक्ति	:	आचार्य विभवसागरजी महाराज	१७
८.	शान्ति प्रार्थना	:	,, ,,	१९
९.	विधान प्रस्तावना	:	,, ,,	२०
१०.	शान्तिनाथ मण्डल विधान पूजा	:	,, ,,	२२
११.	प्रत्येक अर्घ्य	:	,, ,,	२५
१२.	जयमाला	:	,, ,,	७६
१३.	शान्तिनाथ आरती	:	,, ,,	७८
१४.	समाधि भक्ति	:	,, ,,	७९

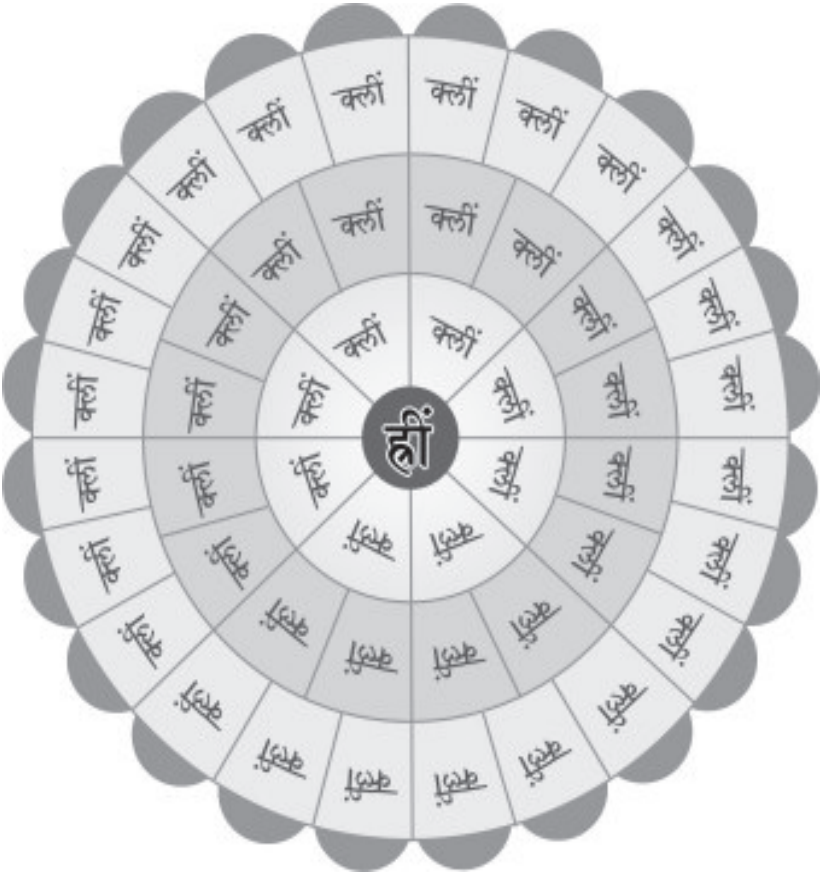

विश्वशान्ति विधान मण्डल (माड़ना)

प्रस्तावना

सत्संयम-पयः-पूर, पवित्रित - जगत्त्रयम्।
शान्तिनाथं नमस्यामि, विश्वविघ्नौघ - शान्तये॥

अर्थ : सम्यक्चारित्र रूपी जल के प्रवाह से जगत्त्रय पवित्र करने वाले श्री शान्तिनाथ भगवान् को मैं विश्व के विघ्नों की शान्ति के लिए नमस्कार करता हूँ।

आत्मा के असंख्यात प्रदेशों पर विराजमान चैतन्यशक्ति से व्याप्त परमशुद्ध समयसार अरस, अरूप, अगंध, अमल, अचल, अनंत गुणों के पुञ्ज सिद्धपरमेष्ठी श्री शान्तिनाथ भगवान् का ध्यान भव्यजीवों को शान्ति प्रदान करने वाला है।

संसार का प्रत्येक भव्यजीव आत्म शान्ति चाहता है, अपनी-अपनी बुद्धि के अनुसार आत्म-शान्ति की खोज करता है, परन्तु शान्ति नहीं पाता।

एक महानुभाव ने मुझसे प्रश्न किया-आत्मशान्ति कहाँ मिलेगी? मैंने प्रति प्रश्न किया - कुँआ का पानी कहाँ मिलेगा? उन्होंने उत्तर दिया -कुँआ में। मैंने कहा - जैसे कुँआ का पानी कुँआ में मिलेगा, वैसे ही आत्मशान्ति आत्मा में ही मिलेगी।

प्रिय आत्मन्! विश्वशान्ति विधान में आत्मशान्ति की प्राप्ति के उपाय मंगल, उत्तम, शरण स्वरूप जगत् शान्तिकर, शान्ति विधायक श्री शान्तिनाथ भगवान् की आराधना तो की ही गई, इसमें नवदेवता को भी शान्ति प्रदायक शान्ति स्वरूप माना गया तथा तीर्थङ्कर के पञ्च कल्याणकों को शान्ति प्रदायक माना गया है। विधान का तृतीय वलय आत्मशान्ति का अन्वेषण करता हुआ, शान्ति पथ दर्शाता है तथा आत्मशान्ति के सूत्र प्रदान करता है।

उदाहरणार्थ देखिए, आत्मशान्ति के चार उपाय -

निजता और सहजता हो,
समता और सरलता हो।

सहज शान्तिरस पाओगे।
आत्म शान्ति प्रकटाओगे॥

उक्त चार पंक्तियाँ सिद्धक्षेत्र आहारजी में श्री शान्तिनाथ के समक्ष शान्ति प्रार्थना करते समय हृदय सरोवर में उद्भूत हुई थी। समग्र विधान आगम, अध्यात्म तथा आत्मचिंतन तथा गुरु उपदेश का सुफल फलितार्थ हुआ है।

प्रस्तुत विधान में आत्मशान्ति से लेकर शान्तिनाथ बनने का संविधान है। इसे विधान के समय तो पढ़ें ही अन्य समय स्वाध्याय रूप में भी पढ़ें। विधान का अर्थ जैसे-जैसे हमारे ज्ञान तथा आचरण में आयेगा वैसे-वैसे शान्ति तत्त्व प्रकट होता जायेगा।

अतः आप इसे अन्तरात्मा से पढ़ें, मेरा विश्वास है, यह विधान आपको आत्मशान्ति प्रदान करने में सक्षम होगा।

इस विधान में शान्तिपुराण, स्वरूपसम्बोधन, प्रतिक्रमण, समय-सारादि ग्रन्थों का रसास्वादन पूर्वक भावानुवाद दृष्टव्य है, मैं उन समस्त पूर्वाचार्यों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ, जिनके ग्रन्थों का रसास्वादन कर मुझे विश्वशान्ति विधान सृजन के भाव मिले। मैं परम कृतज्ञ हूँ संयम प्राण प्रदाता प.पू. गणाचार्य गुरुदेव विरागसागरजी महाराज का जिन्होंने मुझे अक्षराभिषेक करने की कला सिखायी। उनके तीर्थपूत पाद पद्मों में कोटिशः प्रणाम।

प्रस्तुत विधान को सुसंपादित करने वाले प्रतिष्ठाचार्य श्रीयुत पं. प्रवर सनतकुमार विनोदकुमारजी, रजवांस को शुभाशीर्वाद तथा अपनी चंचला लक्ष्मी का सदुपयोग करने वाले उदार दानवीर महानुभावों को आशीर्वाद।

अखिल विश्व में शान्ति हो, इस मनोकामना के साथ आत्मशान्ति प्रदायक देवाधिदेव श्री शान्तिनाथ भगवान् के श्री चरणों में कोटिशः नमन।

श्री शान्तिनाथ दिग.जैन — आचार्य विभवसागर
अतिशय क्षेत्र, तेंदूखेड़ा — २५.०१.२०११

पुरोवाक्

अब, जब हमारे पूज्यनीय संतगण अपने निर्मल हृदय में विश्व-शान्ति की कामना करते हैं और समाज, देश तथा विश्व में प्रभावना की ज्योति नित्य-नित्य प्रज्ज्वलित करते हैं, तब वर्तमान प्रजा और राजा बने अन्यान्य मुखाकृतियों को समय रहते अपने सोच, कार्य और आचरण में सुधार करना चाहिए ताकि भूमण्डल से भ्रष्टाचार, आतंकवाद, नक्सलवाद और पर्यावरणीय-अशुद्धि पर नियंत्रण पाया जा सके और समस्त संसार विश्व-मैत्री का संकल्प साधकर विश्वशान्ति में सहायक हो सके। प.पू. आचार्य, जिन्हें देश में सारस्वत-श्रमण और सारस्वत-कवि के रूप में शिरोधार्य किया गया है, महायोगी १०८ श्री विभवसागरजी महाराज द्वारा चलाई गई, 'विधान-क्रांति' विशेष रूप से विश्वशान्ति से ही पूरा-पूरा सरोकार रखती है। उन्होंने अनेक विधानों की सुंदर-सरस रचना कर अपनी क्रांति को शाश्वत-दिशा प्रदान की है। यदि प्रमुख विधानों के नाम यहाँ संयोजित किए जावें तो वे हैं क्रमशः - तीर्थङ्कर विधान, एकीभाव विधान, गोमटेश विधान, पार्श्वनाथ विधान, द्रोणगिरि विधान, कुण्डलपुर विधान और प्रस्तुत कृति 'श्री विश्वशान्ति विधान'।

गुरुदेव का उपक्रम विधान-विधान चल रहा है, जिसके कारण अलग-अलग शहरों/प्रदेशों के श्रावकगण टोली बनाकर धर्मसाधना में जुटते रहते हैं और विश्वशान्ति की दिशा में यात्रा को बढ़ाते हैं। विश्वशान्ति की भावना विधान का अरिक्त-उद्देश्य है, मूल-उद्देश्य तो अपने इष्ट से जुड़कर धर्ममय बने रहना है, धर्म करते रहना है और आत्मतत्त्व की ओर देखते रहना है। विधान ही धर्म हो, ऐसा नहीं है, मगर विधान धर्मसाधना का एक हेतु है।

धर्म से जोड़े रहने वाला यह विधान धर्म के विषय में 'कुछ' जान लेने का भी साधन है। धर्म जिसके विषय में आचार्य तिरुवल्लवर ने कुरल काव्य में लिखा है –

धर्मात् साधुतरः कोऽन्यो, यतो विन्दन्ति मानवाः।
पुण्यं स्वर्गप्रदं नित्यं, निर्वाणञ्च सुदुर्लभम्॥

''धर्म से स्वर्ग की प्राप्ति होती है, उससे मोक्ष भी मिलता है, फिर भला, धर्म से बढ़कर लाभदायक वस्तु और क्या है?'' तो विश्वास करना चाहिए कि पूज्य आचार्य विभवसागरजी ने सर्वसाधारण को 'विधान' के रूप में वह वस्तु प्रदान कर दी है, जिससे लाभदायक तत्त्व (धर्म) प्राप्त किया जाता है। आचार्य देव कहते हैं – धर्म से बढ़कर दूसरी और 'नेकी' नहीं है और उसे भुला देने से बढ़कर दूसरी कोई बुराई नहीं है। अस्तु। विधान से धर्म याद रहता है अतः विधान–रचयिता का यह एक बड़ा उपकार माना जाना चाहिए।

'विश्व शान्ति विधान' में अनेक छंदों का उपयोग किया गया है, जिनमें चौदह मात्रा वाले छंद का उपयोग सर्वाधिक देखने मिला है। यों गुरुदेव को शब्द–शिल्प में महारत प्राप्त है ही, भाषा और व्याकरण के भी वे चितेरे हैं, अतः सम्पूर्ण रचना 'सर्वांग–सुन्दर' बन पड़ी है। जब सहस्रों इंद्र–इंद्राणी केशरिया वस्त्र और मुकुट धारण कर विधान की पंक्तियाँ लय से उच्चारित करेंगे तो वह दृश्य धर्म–प्रधान तो होगा ही, उनकी गूँज से विश्वशान्ति के सूत्र स्वतः निःसृत हो पड़ेंगे। देश के बड़े से बड़े संगीतकार अपने वाद्ययंत्रों से विधान की स्वर–लहरियाँ निकाल कर यंत्रों को और खुद को धन्य करेंगे। शिरोमणि प्रतिष्ठाचार्यगण विधान सम्पन्न करा कर, समूह सहित स्वयं को कृतकृत्य करेंगे।

परम्परा और आधुनिकता का सच्चा निर्वाह करने वाली यह महान– रचना जन–जन से सराहना पायेगी। नपे–तुले अक्षर; गिनी–चुनी मात्राएँ और प्रयुक्त रस–अलंकार बड़े–बड़े भाषाविदों को चकित करेंगे।

देश में अनेकानेक विद्वानों और संतों के द्वारा सैंकड़ों विधान रचे गये हैं, जिनका समय-समय पर उपयोग भी किया जा रहा है; पर यह विधान! यह तो आत्मा से बाँचा जाने वाला बन पड़ा है; इसे कहते हुए भक्त को भगवान् शान्तिनाथ बाहर नहीं; अपने आत्म प्रदेश में रचित सिद्धशिला पर विराजमान मिलेंगे।

ऐसी दुर्लभ रचना के लिए मैं गुरुदेव को हार्दिक बधाई ज्ञापित करता हूँ और करता हूँ उनका चरणाभिवंदन। रचना के शीर्षक-शान्ति प्रार्थना, विधान प्रस्तावना आदि सहित शान्ति-जिनालय, भक्त की चाह, फिर-शान्तिपथ, शान्तिशरण, शान्त स्वरूप, समता का सौन्दर्य, मन का वैचित्र्य, चैतन्य कला, विश्वशान्ति का महानिलय, आत्म परिचय, देह परिचय, दर्शन-आनंद आदि -आदि ऐसे 'घोष' हैं, जिनका रहस्य उनके नीचे रचित छंदों से स्पष्ट होता जाता है। एक भारी मनोविज्ञान भी पाठक के साथ चलता रहता है। रचना सचमुच में अति-विशेष है। धर्म और शान्ति की स्थापना के सूत्र लिए हुए, आत्मा के अपूर्व आनंद से सराबोर।

१५ जनवरी, २०११
(मकर संक्रांति)

सुरेश जैन 'सरल'
४०५, सरल कुटी
गढ़ाफाटक, जबलपुर
मो.९४२५४१२३७४

सम्पादकीय

जन कल्याण की भावना जैनदर्शन का मूल सिद्धान्त रहा है, इस कारण ही जैनधर्म जन-जन का धर्म बन सका है। **देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शान्तिं भगवज् जिनेन्द्रः** की भावना हम निरन्तर भाते रहते हैं। इसी को आधार बनाकर अशान्त, दुःखी, बैचेन, रोगी, परेशान जीवों के अशुभ कर्मों को शुभ रूप करने एवं उनके दुःखों को दूरकर उन्हें शान्ति प्रदान करने, युद्ध के क्षेत्र में तैयार खड़े विश्व के अनेक देशों की कषाय प्रवृत्ति और अतितृष्णा को शान्त करने एवं हिंसा के ताण्डव को समाप्त कर शान्ति की स्थापना करने की मंगल भावना से इस विधान का सृजन, अनेक विधानों के प्रभावी, सफल एवं श्रेष्ठ-लेखक, सारस्वत कवि, दया के भण्डार आचार्य श्री १०८ विभवसागरजी महाराज द्वारा हुआ है। आप अध्यात्म विद्या के रसिक, स्वाध्यायी, मनन चिन्तन एवं आत्मसाधना में निरन्तर निर्बाध संलग्न हैं। आपकी प्रज्ञा एवं काव्य सृजन शीलता अनुपमेय है। आपने अल्पवय में ही श्रेष्ठ रचनायें कर आदर्श प्रस्तुत किया है। आपकी रचनायें हृदयस्पर्शी, सारगर्भित एवं अध्यात्म रस से ओत-प्रोत रहती हैं, जिसका उदाहरण 'समाधि भक्ति' है, जो थोड़े ही समय में जन-जन को प्रिय हो गई, लोग इसका प्रतिदिन पाठ करते हैं। आपने कुण्डलपुर विधान, द्रोणगिरि विधान, गोमटेश विधान आदि अनेक विधानों की रचना की है। इसी शृंखला में आपने विश्वकल्याण की भावना से विश्वशान्ति विधान का सृजन किया है। आपकी कृतियों में मौलिक चिन्तन की छटा स्पष्ट दिखाई देती है।

इस विधान में आपने चत्तारि दण्डक, नवदेवता आदि की आराधना से विश्व में शान्ति करने की भावना प्रकट की है। इसमें मंत्रों के माध्यम

से आराधक को ऋद्धि–सिद्धी की वृद्धि का भाव व्यक्त किया गया है। इस प्रकार चिन्तन अपने आप में एकदम मौलिक एवं नया है। इसके माध्यम से भक्तिपूर्वक आराधना द्वारा अपने परिणाम विशुद्ध मन को शांत बनाकर विश्वकल्याण की भावना बनायेंगे। इस विधान के सम्पादन में हमसे कुछ विषय छूट भी गया होगा, इसके लिए विज्ञ जन शोधकर सूचित करने की कृपा करें, इसके प्रकाशन में जिनका प्रत्यक्ष–परोक्ष सहयोग प्राप्त हुआ उनके हम आभारी हैं।

विश्वशान्ति विधान, विश्वशान्ति की स्थापना में मील का पत्थर बने, ऐसी भावना है।

पं. सनतकुमार विनोदकुमार जैन

रजवांस, सागर (म.प्र.)

मेरी अनुभूति

स्वदोष-मूलं स्व-समाधि-तेजसा,
निनाय यो निर्दय-भस्मसात् क्रियाम्।
जगाद तत्त्वं जगतेऽर्थिनेऽञ्जसा,
बभूव च ब्रह्म - पदा-मृतेश्वर!॥

जिन्होंने अपने समस्त दोषों के मूल कारण को अर्थात् घातिया कर्मों को निर्विकल्प समाधि के द्वारा परम शुक्लध्यान रूपी अग्नि के द्वारा निर्दयता पूर्वक समूल नष्ट कर दिया था तथा जिन्होंने तत्त्व ज्ञान के इच्छुक जीवों के लिए यथार्थ जीवादि तत्त्वों का स्वरूप कहा और अन्त में जो मोक्ष स्थान के अविनाशी अनंत सुख के स्वामी हुए।

विश्वशान्ति विधान जो आचार्य श्री विभवसागरजी ने रचा है, वह पाठक को अध्यात्म की ओर अभिमुख करने वाला है। शान्ति विधान पढ़ने से जीव को आत्मिक शान्ति एवं वैचारिक शान्ति का संवेदन होता है। आचार्य श्री ने जीव के आत्म उत्थान के लिए इस विधान में ऐसे भावों को संजोया है कि जिसके पढ़ने से जीव चर्यावान, दयावान, क्रियावान, धर्मवान बन जाता है। उन्होंने इतना महान् विधान प्रभु की भक्ति करते-करते, उनकी वीतरागी छवि को निहारते-निहारते इन काव्यों का लेखन किया है। इस विधान में त्रैलोक्य में स्थित अनंतानंत जीवों के प्रति मानसिक, वाचनिक एवं कायिक शान्ति की भावना भायी गयी है। उनकी भाषा में सरलता, विमलता, निर्मलता व अलंकार, छंदों का अच्छा समन्वय है। इसको भक्ति भाव पूर्वक पढ़ने से एवं उन काव्यों में हुए अर्थों को समझकर पढ़ने से जीव की असंख्यात कर्मों की निर्जरा होती है। आचार्य महाराज के विधानों में छंदों का, अलंकारों का, समासों का,

भावनाओं का, शब्दों का, अक्षरों का, मात्राओं का अनूठा संगम है, इस मांगलिक विधान के पढ़ने से श्रावकों तथा श्रमणों को, अति आनंद की अनुभूति होगी क्योंकि इसमें भक्ति की त्रिवेणी प्रवाहित की गयी है।

यह विधान जन-जन की आस्था का केन्द्र है। इसमें बताया गया है कि सच्ची शान्ति आत्मा में है। उसे जीव बाहर खोजते हुए अपना अमूल्य समय एवं धन व तन को खो रहे हैं। इस विधान के पढ़ने से भूले-भटके जीवों को दिशा बोध एवं आत्म उत्थान के निर्देश मिलेंगे, इसमें विश्व शान्ति की प्रार्थना का समावेश है। शान्ति विधान में चौबीस तीर्थङ्करों की स्तुति, चारों मंगल, उत्तम, शरण एवं नवदेवताओं का वास्तविक सच्चा स्वरूप बताया गया है। कल्याणक का सुंदर क्रम भी निरूपित किया है, जिससे जीव को भान हो सके कि गर्भ किसलिए? जन्म के लिए, जन्म किसलिए? दीक्षा के लिए, दीक्षा किसलिए? केवलज्ञान के लिए, केवलज्ञान किसलिए? मुक्ति रूपी लक्ष्मी का वरण करने के लिए इतना सुंदर कल्याणकों का प्ररूपण मैंने अभी तक न पढ़ा था, न सुना था, न देखा था। इस विधान में बताया गया कि धन पाने में जीव जो श्रम करके सुख मानता है वह उसका भ्रम है। सच्चा सुख सोना-चाँदी व नव रत्नों में नहीं रत्नत्रय में है। समतामय जीवन कैसे जिया जाता है? उसका भी अच्छा उल्लेख किया है। कृतिकार परम पूज्य दीक्षा गुरु आचार्य श्री विभवसागरजी के श्री चरणों में नमोऽस्तु .....।

मुनि आचरणसागर

श्री शान्ति जिनस्तवन

१.

विधाय रक्षां परतः प्रजानां,
राजा चिरं योऽप्रतिम-प्रतापः।
व्यधात् पुरस्तात् स्वत एव शान्तिर्
मुनिर्दया मूर्तिरिवाऽघशान्तिम् ॥

२.

चक्रेण यः शत्रु - भयंकरेण
जित्वा नृपः सर्व-नरेन्द्र-चक्रम्।
समाधि - चक्रेण पुनर्जिगाय
महोदयो दुर्जय - मोहचक्रम्॥

३.

राजश्रिया राजसु राज-सिंहो
रराज यो राज-सुभोग-तन्त्रः।
आर्हन्त्य- लक्ष्म्या पुनरात्म-तन्त्रो
देवासुरोदार - सभे रराज॥

४.

यस्मिन् - नभूद्राजनि राज-चक्रं
मुनौ दया- दीधिति धर्म-चक्रम्।
पूज्ये मुहुः प्राञ्जलि देवचक्रं
ध्यानोन्मुखे ध्वंसि कृतान्तचक्रम् ॥

५.

स्वदोषशान्त्या विहितात्म-शान्तिः,
शान्तेर्विधाता शरणं गतानाम् ।
भूयाद् भवक्लेशभयोपशान्त्यै,
शान्तिर्जिनो मे भगवान् शरण्यः॥

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें)

शान्त्यष्टक

अथार्हत्पूजारम्भ–क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्म–क्षयार्थं भावपूजा वंदनास्तवसमेतं श्री शान्तिभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(नौ बार णमोकार मंत्र)

न स्नेहाच्छरणं प्रयान्ति भगवन्! पादद्वयं ते प्रजाः,
हेतुस्तत्र विचित्र–दुःख – निचयः संसार – घोरार्णवः।
अत्यन्त–स्फुरदुग्र–रश्मि–निकर–व्याकीर्ण – भूमण्डलो,
ग्रैष्मः कारयतीन्दुपाद–सलिलच्छायानुरागं रविः॥ १॥

प्रणाम करने का ऐहिक फल

क्रुद्धाशीर्विष – दष्ट – दुर्जय – विष–ज्वालावली–विक्रमो,
विद्या–भेषज–मंत्र–तोय – हवनै र्याति प्रशान्तिं यथा।
तद्वत्ते चरणारुणाम्बुज–युग–स्तोत्रोन्मुखानां नृणाम्,
विघ्नाःकायविनायकाश्च सहसा शाम्यन्त्यहो विस्मयः॥ २॥

प्रणाम करने का फल

सन्तप्तोत्तम काञ्चन – क्षितिधर–श्री–स्पर्द्धि – गौरद्युते।
पुंसां त्वच्चरणप्रणाम–करणात् पीडाः प्रयान्तिक्षयं॥
उद्यद्भास्कर–विस्फुरत्कर – शतव्याघात – निष्कासिता।
नाना–देहि–विलोचन–द्युतिहरा शीघ्रं यथा शर्वरी॥ ३॥

मुक्ति का कारण जिनस्तुति

त्रैलोक्येश्वर! भंगलब्ध–विजयादत्यन्त रौद्रात्मकान्।
नाना–जन्म–शतान्तरेषु पुरतो जीवस्य संसारिणः॥

को वा प्रस्खलतीह केन विधिना कालोग्रदावानलान्।
न स्याच्चेत्तव पाद-पद्म-युगलस्तुत्यापगा वारणम् ॥ ४॥

स्तुति से असाध्य रोगों का नाश

लोकालोकनिरन्तर - प्रवितत् ज्ञानैकमूर्त्ते - विभो!
नानारत्न - पिनद्ध - दण्डरुचिर श्वेतातपत्रत्रय॥
त्वत्पादद्वय - पूतगीतरवतः शीघ्रं द्रवन्त्यामयाः।
दर्पाध्मातमृगेन्द्रभीम निनदाद् वन्या यथा कुञ्जराः॥ ५॥

स्तुति से अनन्त सुख

दिव्यस्त्री-नयनाभिराम-विपुल-श्रीमेरु चूड़ामणे,
भास्वद् वाल-दिवाकर-द्युतिहर-प्राणीष्ट! भामण्डलम्।
अव्याबाध-मचिन्त्यसार-मतुलं त्यक्तोपमं शाश्वतम्,
सौख्यं त्वच्चरणारविन्द-युगलं स्तुत्यैव सम्प्राप्यते॥ ६॥

भगवान के चरण-कमल प्रसाद से पापों का नाश

यावन्नोदयते प्रभा - परिकरः श्रीभास्करो भासयंस्,
तावद् धारयतीह पंकज - वनं निद्रातिभार - श्रमम्।
यावत्त्वच्चरणद्वयस्य भगवन्! न स्यात् प्रसादोदय,
स्तावज्जीव - निकाय एष वहति प्रायेण पापं महत्॥ ७॥

स्तुति फल याचना

शान्तिं शान्ति जिनेन्द्र! शान्त मनसस्-त्वत्पाद-पद्माश्रयात्।
संप्राप्ताः पृथिवी - तलेषु बहवः शान्त्यर्थिनः प्राणिनः।
कारुण्यान् मम भाक्तिकस्य च विभो! दृष्टिं प्रसन्नां कुरु।
त्वत्पादद्वय-दैवतस्य गदतः शान्त्यष्टकं भक्तितः॥ ८॥

(नौ बार णमोकार मंत्र)

शान्ति भक्ति

१.

नहीं प्रेम से आते भगवन्! भक्त शरण तेरे।
कारण उसका भव सागर में, दुख अनंत घेरे॥
ग्रीष्म काल में रवि किरणों से, आकुलता पाते।
तब ही चन्द्रकिरण जल छाया, जन जन को भाते॥

२.

जैसे सर्प दशित मानव की, विष बाधा भारी।
विद्या औषध मंत्रों द्वारा, हो निर्विष कारी॥
उसी तरह जिनदेव आपकी, जो संस्तुति गा लें।
विघ्न व्याधियाँ स्वतः शान्त हों, अचरज क्या पा लें॥

३.

गिरि सुमेरु सम शोभाशाली, पीतवर्ण धारी।
शान्तिनाथ हे शान्ति प्रदाता, विश्व शान्ति कारी॥
ज्यों उदयाचल रवि की किरणें, निशा तिमिर हारी।
त्यों प्रभुवर दो चरण आपके, दुख नाशन कारी॥

४.

नर नागेन्द्र इन्द्र पर जय पा, करे राज भारी।
मृत्यु रूपी दावानल में, जले प्रजा सारी॥
किस विधि कैसे कौन बचाये, कौन बचा पाता।
यदि संस्तुति की निर्मल सरिता, नहीं बहा लाता॥

५.

लोकालोक उजाला करती, ज्ञान मूर्ति न्यारी।
रत्न जड़ित छत्रत्रय सोहे, रजत रंग धारी॥
प्रभु आपके श्रीपद पा जो, गीत भजन गाते।
रोग भागते जैसे हाथी, सिंह गर्जन पाते॥

६.

कामदेव! चक्री! तीर्थङ्कर, चूड़ामणि जग के।
बाल अरुण की आभा हरते, भामण्डल चमके॥
अव्याबाधी अचिन्त्य अनुपम, शिवसुख अविनाशी।
प्राप्त करें गुण गायन से, शाश्वत सुख राशी॥

७.

विश्व प्रकाशी सूरज नभ में, उगे नहीं जौ लौं।
इस जगती के कमल वनों में, निद्रा है तौ लौं॥
जौ लौं जग को प्रभु चरणों का, लाभोदय ना हो।
तौ लौं ही इस जग के प्राणी, रहे पाप को ढो॥

८.

शान्तिनाथ हे! शान्तमना नर, शान्त्यर्थ तेरी।
चरण छाँव में आते भविजन, बनी शान्ति चेरी।
चरण आपके बिठा हृदय में, भक्त भक्ति मय हो।
शान्ति भक्ति गाता हूँ भगवन्! सम्यग्दर्शन दो॥

शान्ति प्रार्थना

१.

सहज शान्तरस लीन हो, सहज शान्त रस कूप।
विश्व शान्ति के केन्द्र हो, शान्तिनाथ शिवरूप॥

२.

विश्व शान्ति संस्थापना, कीजे शान्ति जिनेन्द्र।
अखिल विश्व की प्रार्थना, सुनिए शान्ति मुनीन्द्र॥

३.

बहे हिमालय से सदा, ज्यों गंगा जलधार।
त्यों शान्त्यालय आपसे, बहे शान्तिरस धार॥

४.

शान्तिनाथ का नाम ही, आत्मशान्ति का स्रोत।
अतः नाममाला जपूँ, सविनय ओत-प्रोत॥

५.

शान्ति प्रसारण में दिया, विश्व शान्ति संदेश।
परम अहिंसा धर्म से, होगी शांति विशेष॥

६.

लोकत्रय क्या चाहते, आत्म शान्ति भगवान।
अतः शान्ति बरषाइए, हे प्रभु! शान्तिनिधान॥

७.

शान्तिनाथ का धर्म ही, करता शान्ति प्रसार।
परम अहिंसा धर्म ही, विश्व शान्ति आधार॥

८.

जिओ शान्ति से आप भी, जीने दो गणतंत्र।
परम स्वतंत्रता है यही, राष्ट्र शांति का मंत्र॥

विधान प्रस्तावना

१.

श्री विजयनृप द्वार में, कोई प्रज्ञावान।
शुभाशीष दे बोलता, हे नृप दीजे ध्यान॥

२.

ठीक आज से सातवे, दिन पोदनपुर ईश।
वज्रपात हो जायेगा, पोदनेश के शीश॥

३.

यह निमित्त बतला दिया, समझो हित मन लाय।
दृढ़ निश्चय कर कीजिए, रक्षा हेतु उपाय॥

४.

श्री विजय तब कुपित हो, बोला तू सर्वज्ञ।
तेरे शिर पर क्या गिरे, बतला दे हे प्रज्ञ॥

५.

तत्क्षण बोला पुरुष वह, कहूँ राज दरबार।
मेरे शिर पर गिरेगी, रत्नराशि की धार॥

६.

अग्रिम तीर्थङ्कर बने, शान्तिनाथ भगवान।
कठिन समस्या पायेगी, समाधान धर ध्यान॥

७.

मति सागर मंत्री प्रवर, शान्तिनाथ को ध्याय।
तत्क्षण बोला नृप! सुनो, समाधान मन लाय॥

८.

जय होगी नृप आपकी, सुनलो हे नरनाथ।
वज्र गिरेगा सत्य पर, पोदनेश के माथ॥

९.

अतः आप तज दीजिए, सात दिनों को राज्य।
जब संकट टल जाय तब, फिर करना स्वराज्य॥

१०.
यक्ष मूर्ति पधराय कर, राजा उसे बनाय।
स्वयं राज पद त्यागकर, भक्तराज बन आय॥

११.
दान धर्म करने लगा, षट् कर्त्तव्य महान।
जिनपूजा के साथ ही, करता शान्ति विधान॥

१२.
सप्त दिवस करता रहा, मंगलमयी विधान।
शान्तिनाथ गुणगान से, पायी शान्ति महान्॥

१३.
वज्रपात होकर रहा, किन्तु अमंगल दूर।
शान्तिनाथ के ध्यान से, रही शान्ति भरपूर॥

१४.
शिर पर आयी मौत भी, दूर हुई जब नाथ।
जय जयकारा हो गया, शान्तिनाथ जगनाथ॥

१५.
नमस्कार की शक्ति ही, चमत्कार प्रकटाय।
अथवा अतिशय नाम पर, दृढ़ विश्वास बढ़ाय॥

१६.
देखा फल प्रत्यक्ष यह, नव जीवन नृप पाय।
तब से जग में शान्ति का, प्रचलित हुआ उपाय॥

१७.
सात दिनों तक कीजिए, भक्तो शान्ति विधान।
आत्म शान्ति के साथ ही, सधे आत्म कल्याण॥

१८.
सोलह दिन का पक्ष हो, सोलहवे भगवान।
सोलह दिन तक कीजिए, मंगल शान्ति विधान॥

१९.
शान्तिनाथ के ध्यान से, मिले शान्ति भरपूर।
शान्तिनाथ विधान ही, करे विघ्न सब दूर॥

श्री शान्तिनाथ मण्डल विधान

मेरे मन के कमलासन पर, शान्ति प्रभो आओ।
शान्ति निकेतन शान्ति जिनेश्वर, आत्म शान्ति लाओ॥
आह्वानन संस्थापन करता, सन्निधि करता हूँ।
शान्तिनाथ के श्री चरणों में, माथा धरता हूँ॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त ! सकलविघ्न शान्तिकर ! मंगलप्रद! पंचमचक्रेश्वर! द्वादशकामदेव! अष्टप्रातिहार्यसंयुक्त! षोडश तीर्थङ्कर! श्री शान्तिनाथ भगवन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्। अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

क्षीर सिन्धु से जल भर लाया, चरण चढ़ाने को।
जन्म जरा मृत्यु जैसे त्रय, रोग मिटाने को॥
तत्त्वज्ञान जल हमें पिलाकर, रोग शमन कर दो।
मेरी पूजा का उत्तम फल, शान्ति जिनेश्वर दो॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः जगदापद्विनाशनाय श्रीशान्तिनाथाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥

चंदन, चन्द्रमणि, चंदा या, चंद्रकिरण भी हो।
सबसे शीतल वचन आपके, और चरण भी दो॥
भवतापों से तपा हुआ हूँ, तपन आप हर दो।
मेरी पूजा का उत्तम फल, शान्ति जिनेश्वर दो॥

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रौं भ्रः जगदापद्विनाशनाय श्रीशान्तिनाथाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥

धवलाक्षर सम अक्षत लाया, अक्षय पद पाने।
अक्षय ज्ञानी के ढिग आया, अक्षय गुण गाने॥

सिद्ध स्वरूपी अक्षय शिवपद, निज पद अक्षर दो।
मेरी पूजा का उत्तम फल, शान्ति जिनेश्वर दो॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः जगदापद्विनाशनाय श्रीशान्तिनाथाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥

श्रद्धा सुमन समर्पित करता, चरण कमल तेरे ।
वीतरागमय भाव जगा दो, हृदय कमल मेरे ॥
रत्नत्रय के पुष्प खिलाकर, मन सुरभित कर दो ।
मेरी पूजा का उत्तम फल, शान्ति जिनेश्वर दो ॥

ॐ रां रीं रूं रौं रः जगदापद्विनाशनाय श्रीशान्तिनाथाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥

षट् रस व्यंजन शान्तिनाथ के, चरण चढ़ाता हूँ।
षट् आवश्यक के षट् रस से, क्षुधा मिटाता हूँ॥
निराहार अनशन स्वरूप को, उद्घाटित कर दो।
मेरी पूजा का उत्तम फल, शान्ति जिनेश्वर दो॥

ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घ्रौं घ्रः जगदापद्विनाशनाय श्रीशान्तिनाथाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

मोह तिमिर को दूर हटाने, दीप जलाता हूँ।
केवलज्ञानी के चरणों में, आरति गाता हूँ॥
आत्मज्ञान का दीप जलाकर, अमरदीप वर दो।
मेरी पूजा का उत्तम फल, शान्ति जिनेश्वर दो॥

ॐ झ्रां झ्रीं झ्रूं झ्रौं झ्रः जगदापद्विनाशनाय श्रीशान्तिनाथाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥

धर्म ध्यान की धूप दशांगी, यहाँ जलाता हूँ।
उसी ध्यान की ज्वाला में सब, कर्म खपाता हूँ॥
मेरे आठों कर्म जलाकर अब, अकर्म कर दो।
मेरी पूजा का उत्तम फल, शान्ति जिनेश्वर दो॥

ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रौं श्रः जगदापद्विनाशनाय श्रीशान्तिनाथाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥

श्रीफल आदिक मधुर-मधुर फल, तुम्हें चढ़ाता हूँ।
महामोक्ष फल दाता आगे, हाथ बढ़ाता हूँ॥
अंतिम फल निर्वाण मिले जिन,यह वांछित वर दो ।
मेरी पूजा का उत्तम फल, शान्ति जिनेश्वर दो ॥

ॐ ख्रा ख्रीं ख्रूं ख्रौं ख्रः जगदापद्विनाशनाय श्रीशान्तिनाथाय फलं निर्वपामीति स्वाहा॥

अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, ये महार्घ लाया।
शान्तिनाथ के चरण चढ़ाने, शान्त्यालय आया॥
जो अनर्घ्य पद तुमने पाया, वह अनर्घ्य वर दो।
मेरी पूजा का उत्तम फल, शान्ति जिनेश्वर दो॥

ॐ अ ह्रां सि ह्रीं आ ह्रूं उ ह्रौं सा ह्रः जगदापद्विनाशनाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक अर्घ्य

मंगलाचरण

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

इष्टदेवता शान्तिप्रभो!
धर्मदेवता शान्तिप्रभो!
शान्ति विधायक शान्तिप्रभो!
शान्ति प्रभो! हे शान्तिप्रभो!

द्रव्यशान्ति हो, शान्तिप्रभो!
क्षेत्रशान्ति हो, शान्तिप्रभो!
कालशान्ति हो, शान्तिप्रभो!
भावशान्ति हो, शान्तिप्रभो!

मनोशान्ति हो शान्तिप्रभो!
वचनशान्ति हो, शान्तिप्रभो।
कायशान्ति हो, शान्तिप्रभो!
आत्मशान्ति हो, शान्तिप्रभो!

ग्रामशान्ति हो, शान्तिप्रभो!
नगरशान्ति हो, शान्तिप्रभो!
राष्ट्रशान्ति हो, शान्तिप्रभो!
विश्वशान्ति हो, शान्तिप्रभो!

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥ 1॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोजिणाणं ज्वरादि रोग विनाशक जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

तीर्थङ्कर-स्तव

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

ऋषभ अजित संभव जिनवर !
अभिनंदन जिन सुमति प्रवर ।
पद्म प्रभो, गुण पद्माकर,
शीश झुकाता पद आकर ॥

अहो सुपारस चन्द्र प्रभो!
पुष्पदन्त गुणवंत विभो।
शीतल जिन शीतलता दो,
भावों में निर्मलता दो ॥

श्रेयस वासु पूज्य विमल,
दो अनंत साहस संबल ।
धर्म धर्म पथ दाता हो,
शान्तिनाथ सुख साता दो ॥

कुन्थु अरह मल्ली स्वामिन्।
मुनिसुव्रत नमि नेमि जिनम् ॥
चिंतामणि पारस भगवन्।
शान्ति सदन अतिवीर नमन ॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहिजिणाणं शिरोरोगविनाशक जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

मंगल

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

मंगल पाप गलाता है,
मंगल सुख को लाता है।
मंगल मंगल दाता है,
मंगल पुण्य प्रदाता है॥

क्षेम कुशल आनन्द अहा,
सौख्य शान्ति शुभलाभ रहा।
चित्त चरित्र हुआ उज्ज्वल,
पा करके चारों मंगल॥

अर्हन् मंगल, मंगल हो,
सिद्ध सुमंगल मंगल हो।
साधू शिव के साधन हो,
मंगल धर्माराधन हो॥

मंगल मंगल कारक हो,
पाप अमंगल हारक हो ।
अतः मंगलाचरण करूँ ।
शान्तिनाथ की शरण वरूँ॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहिजिणाणं नासिकारोगविनाशक जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 3॥

उत्तम

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

तीन लोक में जो उत्तम,
विश्ववंद्य उत्कृष्ट परम।
उत्तम पथ के परिचायक,
मोक्षमार्ग के दरशायक॥

ये चारों ही उत्तम हैं,
सर्वोत्तम परमोत्तम हैं।
ये उत्तम उत्तम गुण दें,
अवगुण हर सब सद्गुण दें॥

पहले उत्तम दोष रहित,
उनको वन्दूँ विनय सहित।
दूजे सिद्धि प्रिया स्वामी,
उनको सादर प्रणमामि॥

तीजे उत्तम मुनिजन हैं,
उनको सादर वन्दन हैं।
चौथा उत्तम धर्म रहा,
जैनधर्म सद्धर्म अहा॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥ 4॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहिजिणाणं अक्षिरोगविनाशक जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 4॥

शरण

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

अशरण जग में कौन शरण?
कहते भगवन् चार शरण।
उन चारों की शरण गहो,
सदाचरण मय सदा रहो॥

जिनका आश्रय पाने से,
जिन्हें ध्यान में लाने से।
पापों से रक्षा होती,
पुण्यमयी शिक्षा होती॥

वही शरण कहलाती है,
तारण-तरण कहाती है।
चार शरण हितकारी हैं,
सुखकारी दुखहारी हैं॥

प्रथम शरण अरिहंतों की,
दूजी शरणा सिद्धों की।
तीजी शरणा मुनिजन की,
चौथी शरणा जिनमत की ॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥ 5॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहिजिणाणं कर्णरोगविनाशक जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

अरिहंत-देवता

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

जगत पूज्य अर्हन्त प्रभो!
अरि नाशक अरिहन्त विभो!
धर्म तीर्थ के कर्त्ता हो,
पाप दुःख भय हर्त्ता हो॥

अरि रज रहस विहीन हुए,
गुणाधीन स्वाधीन हुए ।
निज स्वभाव में लीन हुए,
केवलज्ञान प्रवीण हुए॥

प्रभु आपके शुभ संदेश,
गूँज रहे चैतन्य प्रदेश।
नाथ आपकी दिव्यध्वनि,
जिन जीवों ने जहाँ सुनी॥

वहाँ परस्पर प्रेम बढ़ा,
प्राणी मात्र में क्षेम बढ़ा।
दाह निकन्दन चन्दन हो,
मन वच तन से वन्दन हो ॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥ 6॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठबुद्धीणं ममात्मनि विवेकज्ञानं प्रदायक जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ 6॥

सिद्ध-देवता

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

अष्ट कर्म से मुक्त हुए,
अष्ट गुणों से युक्त हुए।
अष्टम भू पर वास करें,
शाश्वत वहाँ निवास करें॥

पाप पुण्य का नाम नहीं,
दुख चिंता का काम नहीं।
जहाँ शुभाशुभ ध्यान नहीं,
दान और आदान नहीं॥

द्रव्य भाव नोकर्म नहीं,
जहाँ अशाश्वत धर्म नहीं।
ऐसी अनुपम सिद्ध दशा,
प्रकट हुई निर्वाण दशा॥

भाव शुद्धि से सिद्धों को,
तीनों जगत् प्रसिद्धों को।
नमन अनंतानंत सदा,
सिद्ध अनंतानंत सदा॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥ 7॥

ॐ ह्रीं णमो बीजबुद्धीणं हृदयरोगविनाशक जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 7॥

आचार्य देवता

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

पंचाचार प्रपालक हे!
श्रमण संघ संचालक हे!
संघ चतुर्विध नायक हे!
दीक्षा शिक्षा दायक हे!

गुण मणियों की आभा से–
रचा हुआ तन शोभा दे।
निष्प्रमाद चर्या धारी,
शुद्ध हृदय मंगलकारी ॥

गणनायक गण पोषक हे,
सर्व – संघ संतोषक हे।
सकल – परीषह के जेता,
वर्तमान शिवपथ नेता॥

प्रतिपल पर्व समाया है,
फिर भी गर्व न आया है ।
चरण शरण त्यौहार लगे,
मंगलमय व्यवहार लगे ॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पदाणुसारीणं परस्परविरोधविनाशक जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥8॥

प्रथम वलय का पूर्णार्घ्य

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

चक्री चक्र सुदर्शन था,
वशीकरण आकर्षण था ।
षट् खण्डों को जीत लिया,
नहीं किसी को त्रास दिया ॥

तुमने आज्ञा चक्र चला,
किया प्रजा का भला-भला ।
शान्ति राज्य के संस्थापक,
शान्तिनाथ नृप जग नायक ॥

राज चक्र जब त्याग किया,
श्रमणधर्म, अनुराग किया ।
तब से ध्यान चक्र धारा,
कर्म शत्रु को संहारा ॥

धर्मचक्र का हुआ उदय,
विश्वशान्ति का सर्वोदय ।
जन्म चक्र से रिक्त हुए,
मरण चक्र से मुक्त हुए ॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अष्टदल कमलाधिपतये जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय प्रथम वलयोपरि पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपाध्याय देवता

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

स्वपर समय के ज्ञाता हो,
आगम युक्ति प्रमाता हो।
द्वादशांग श्रुत के धारी,
क्रिया ज्ञान मैत्री कारी॥

क्षमाशील हो धरती सम,
हो निःसंग तुम मारुत सम।
नित निर्लेप गगन सम हो,
मुनि मन उज्ज्वल जल सम हो॥

अध्ययन अध्यापन प्रतिपल,
ज्ञान और वैराग्य प्रबल।
निर्लोभी निःस्वार्थ परम,
पाठ पढ़ा दो, पाठक तुम।

मन वच काय त्रिशुद्धि से,
जागृत आत्म विशुद्धि से।
पद पादप की छाँव तले,
ज्ञान प्रदाता शरण मिले॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥ 9॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिण्णसोदारणं श्वासरोगविनाशक जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

साधु देवता

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

साधु सुधारस बरषाते,
सुधियों के मन हरषाते।
परम दिगम्बर मुनि प्यारे,
भव सागर तारण हारे॥

काम-दाम से दूर हुए,
दया-दमन भरपूर हुए।
त्यागी यति विरागी हैं,
सचमुच में बड़भागी हैं ॥

मूलाचार में जीते हैं,
समयसार रस पीते हैं ।
नियमसार के नियम निभा,
हुई अलौकिक आत्म प्रभा॥

पिछी कमण्डलु हाथ रखें,
भाग्य हमेशा साथ रखें।
तीर्थङ्कर के लघुनंदन,
मुनियों को शत-शत वंदन॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयं बुद्धीणं कवित्वं पाण्डित्यं पद प्रदाय जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥10॥

जिनधर्म देवता

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

उत्तम सुख में जो धरता,
जीवों को सुखमय करता।
भव दु:खों का शमन करे,
भुवनत्रय में अमन करे॥

धर्मनाथ धर्मेश्वर ने,
शान्तिनाथ शान्तीश्वर ने ।
रत्नत्रय को धर्म कहा,
मोक्षमार्ग का मर्म कहा ॥

तीन लोक में हितकर जो,
तीन काल में सुखकर जो ।
शुभ धामों का धारक है,
जैनधर्म उपकारक है॥

दशलक्षण उसके जानो,
आत्म लक्ष्य केवल मानो ।
जैनधर्म-सा धर्म नहीं,
धारो इसको आज यहीं ॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेयबुद्धीणं प्रतिवादिविद्याविनाशक जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ 11॥

जिनागम देवता

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

द्वादशाङ्गमय जिनवाणी,
अखिल विश्व की कल्याणी ।
तत्त्वबोधनी हे माता !
मुझे बना दो निज ज्ञाता ॥

जिनवाणी के पद दो पद,
हर सकते हैं सभी विपद।
दे सकते हैं सुख संपद,
काम आयेंगे ये पद-पद ॥

जिनवाणी का एक श्लोक,
प्राप्त करायेगा शिवलोक।
गुरुवाणी का अक्षर एक,
हमें बनाये अक्षय नेक॥

सुधी सुधारस पान करें,
जिनवाणी का गान करें।
करूँ आरती पूजन मैं,
भरो भारती जीवन में॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहियबुद्धीणं अन्यगृहीतं श्रुतज्ञान प्रदाय जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥12॥

जिन चैत्य देवता

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

आप निरायुध निर्भय हैं,
निर्विकार इन्द्रियजय हैं।
निराभरण पर सुन्दर हैं,
सुन्दरता के मन्दिर हैं॥

आनन पर आनन्द अहा,
भाव शुद्धि का छन्द रहा।
सहज शांत मुद्रा धारी,
वीतराग अतिशयकारी ॥

मेरे मन की मूरत हो,
शान्तिविधायी सूरत हो।
भक्त भक्ति कर झूम रहा,
चरण आपके चूम रहा॥

प्रतिमा मन पावन कर दे,
प्रतिभा गुण मुझमें भर दे।
बार-बार जिनदर्शन हो,
निर्मल सम्यग्दर्शन हो॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजुमदीणं सर्व शान्ति प्रदाय जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥13॥

चैत्यालय देवता

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

जय जय जय जय जिन आलय।
जयवंते जिन चैत्यालय।
भक्ति केन्द्र मन भावन ये,
श्रद्धा गृह, अति पावन ये ॥

पाप विनाशक पुण्यालय,
दुःख विनाशक सौख्यालय।
धर्म प्रकाशक धर्मालय,
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्यालय॥

भवहर भवन विमानों में,
व्यन्तर ज्योतिष यानों में।
श्री जिनेन्द्र के प्रतिमालय,
जिनभक्तों के प्रतिभालय॥

समवसरण के प्रतिरूपक,
चिन्मयता के चिद्रूपक।
भव तापों के शान्तिसदन,
जिन चैत्यालय नमन-नमन॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं बहुश्रुतज्ञान प्रदाय जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥14॥

शान्ति जिनालय

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

आप हमारे ईश्वर हो,
श्री सर्वज्ञ जिनेश्वर हो,
ज्ञानेश्वर परमेश्वर हो,
शान्तिनाथ तीर्थेश्वर हो॥

नाथ आपका जिन मंदिर,
समा गया मम मन अन्दर ।
भक्ति केन्द्र श्रद्धा गृह ये,
शान्ति निकेतन जिनगृह ये ॥

यह धर्मोत्सव धाम बना,
नित्योत्सव अभिराम बना ।
भक्त कोयले कूँज रही,
भजनावलियाँ गूँज रही ॥

महामंत्र का नाद यहाँ,
स्याद्वाद संवाद यहाँ।
आत्म शान्ति का शुभ आलय,
शान्तिनाथ का चैत्यालय ॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दसपुव्वीणं सर्व वेदिनो प्रदायक जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥15॥

भक्त की चाह

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

मन में तेरी भक्ति धरूँ,
वचनों में संस्तुति धरूँ।
शिर पर दोनों हाथ धरूँ,
प्रभु चरणों में माथ धरूँ॥

जिन प्रसाद का मैं भूखा,
भले मिले रुखा-सूखा।
सबको बुला खिलाऊँगा,
बड़ी खुशी से खाऊँगा॥

जो इतना भी नहीं मिला,
तो अपनाऊँ ज्ञान कला।
बुद्धिहीन ना हो जाऊँ,
अन्य कहीं ना खो जाऊँ॥

अपने घर भूखा रह लूँ,
क्षुधा वेदना मैं सह लूँ।
मिथ्या विष ना पान करूँ,
ना कुदेव गुणगान करूँ॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदस पुव्वीणं स्वसमय-परसमय प्रदायक जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥16॥

भक्ति संकल्प

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

कर्मावरणों के कारण,
नहीं मिली अरिहंत शरण।
समझ न पाये हे भगवन्!
तेरा तात्त्विक चिन्मय धन॥

माना भूल हमारी है,
किन्तु क्षमा अधिकारी है।
तुमसे जो कुछ ज्ञान मिला,
वही मुझे वरदान मिला॥

उसी ज्ञान के द्वारा मैं,
बहा भक्तियाँ धारा मैं।
जिनवर के गुण गाऊँगा,
और कहाँ से लाऊँगा॥

अहो भक्तियों के बल से,
सच्ची श्रद्धा संबल से।
पाप कर्म गल जायेंगे,
पुण्य रूप ढल जायेंगे॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं जीवितमरणादि ज्ञानप्रदाय जगच्छान्ति-करांय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥17॥

जिनमाता वंदन

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

पूज्य महत्तम मनहारी,
सरस्वती सी गुणधारी।
शीलवती वह कला कुशल,
धन्य किया है नारी कुल ॥

ऐरादेवी माता हे !
जगतवंद्य जिनमाता हे,
मञ्जुभाषिणी प्रियंवदा,
लगे शारदा सदा-सदा ॥

आनन पर आनंद रहे,
जिन आगम मकरन्द भरे ।
जिन वाणी के छन्द झरे,
निर्विकल्प निर्द्वन्द्व अरे ॥

माता को सपना आया,
सपने में अपना आया।
तीर्थङ्कर गर्भस्थ हुए,
तीन लोक धर्मस्थ हुए॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वणपत्ताणं कामितवस्तु प्रदाय जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥18॥

कल्याणक का सुन्दर क्रम

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

जन्म नहीं तो गर्भ वृथा,
दीक्षा बिन है जन्म वृथा।
ज्ञान हीन दीक्षा से क्या,
मोक्ष लक्ष्य बिन ज्ञान वृथा॥

जन्म लाभ से गर्भ सफल,
दीक्षा से हो जन्म सफल।
आत्मज्ञान दीक्षा का फल,
ज्ञान वही जो दे शिवफल ॥

कल्याणक का सुन्दर क्रम,
अपनायें जीवन में हम।
तब होगा यह जन्म सफल,
आज नहीं तो निश्चित कल ।

शान्तिनाथ के कल्याणक,
आत्मशान्ति के निर्णायक ।
यह कल्याणक जिन पूजा,
पूजा सम फल ना दूजा ॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं उपदेशप्रदेशमात्र ज्ञान प्रदाय जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥19॥

गर्भ कल्याणक

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

सोलह कारण भाये जिन,
कहलाये सोलहवें जिन।
माँ सोलह सपने देखे,
सोलह आने सच देखे॥

सोलहवे तीर्थङ्कर का,
अखिल विश्व क्षेमंकर का।
आज गर्भ अवतार हुआ,
मात स्वप्न साकार हुआ॥

भादों का महिना आया,
भद्र भाव जग में छाया।
वदी सप्तमी तिथि आई,
गर्भोत्सव खुशियाँ लाई॥

नाथ आपका गर्भोत्सव,
बना जगत में धर्मोत्सव।
आज गर्भकल्याणक हम,
मना रहे हैं शान्तिप्रदम् ॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं नष्टपदार्थचिंताज्ञान प्रदाय जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥20॥

जन्म कल्याणक

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

जेठ वदी चौदस आयी,
भुवनत्रय खुशियाँ लायी।
जन्मतिथि यह कहलायी,
चलो हस्तिनापुर भाई॥

तीर्थङ्कर का जन्मोत्सव,
मनुजोत्सव या देवोत्सव।
अहो जन्म कल्याणक है,
शुभ दायक सुखदायक है॥

ऐरा सुत ऐरावत पर,
चले सुमेरु पर्वत पर।
देवेश्वर ने सर्वप्रथम,
शान्तिनाथ का किया न्हवन॥

चिह्न देख शुभ नाम दिया,
शान्तिनाथ जय गान किया।
शान्तिनाथ जग शान्ति करो,
अखिल विश्व में शान्ति भरो॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥ 21॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं आयुष्यावसानज्ञानप्रदाय जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥21॥

दीक्षा कल्याणक

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

दर्पण में देखी काया,
एक साथ दो-दो छाया।
इनमें कौन रूप मेरा,
मैं अरूप चिन्मय मेरा॥

पूर्व भवों के रूप यही,
पुद्गल तन के रूप सही।
आत्म तत्त्व का रूप नहीं,
रूपी आत्म स्वरूप नहीं॥

जेठ वदी चौदस के दिन,
भा करके बारह भावन।
उर वैराग्य उमड़ आया,
दीक्षा योग प्रबल पाया।

लौकान्तिक सुरगण आये,
संस्तुति करके गुण गाये।
सर्वार्थसिद्धि शिविका लाये,
चले आप दीक्षा पाये॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥ 22॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामीणं अन्तरीक्षगमन प्रदाय जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥22॥

ज्ञान कल्याणक

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

सिद्ध साक्ष्य संन्यास लिया।
शुद्धातम में वास किया॥
महामुनीश्वर मौन धरा,
शुद्ध हृदय में ध्यान धरा॥

कभी लगाया प्रतिमासन,
पद्मासन या वीरासन।
उत्तम-उत्तम ध्यानासन,
शान्तिप्रदायक आत्मासन॥

शुक्लध्यान परिपूर्ण किया,
कर्माचल को चूर्ण किया।
तत्क्षण केवलज्ञान हुआ,
यह चौथा कल्याण हुआ।

अखिल विश्व को ज्ञान मिला,
दिव्यध्वनि का दान मिला।
आज ज्ञान कल्याणक हम,
मना रहे है ज्ञान प्रदम्॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥ 23॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं विद्वेषप्रतिहत शक्ति प्रदायक जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥23॥

निर्वाण कल्याणक

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

जिनमें केवलज्ञान अहा,
केवल दर्शन सौख्य लहा।
जिनमें शक्ति अनंत रहे,
मुझमें भक्ति अनंत रहे॥

नित्य निरंजन अविनाशी,
सदा शान्तिमय सुखराशि।
सिद्ध शुद्ध अविकारी हे,
पूर्ण विभव गुण-धारी हे॥

कर्मवृक्ष के उच्छेदक,
ज्ञातादृष्टा भव भेदक।
निज स्वभाव को साध लिया,
समरसता का स्वाद लिया॥

न अभाव से सिद्ध हुए,
गुण-स्वभाव से सिद्ध हुए।
सिद्ध प्रभो मेरे भगवन्!
शान्तिनाथ दो शान्ति सदन॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविसाणं स्थावरजंगमकृतविघ्नविनाशक जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 24॥

द्वितीय वलय का पूर्णार्घ्य

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

व्रतियों में हो महाव्रती,
यतियों में हो महायति।
गुरुओं में हो महागुरु,
तरुओं में ज्यों कल्पतरु॥

गुण रत्नों के स्वामी हो,
मुक्तिपति अभिरामी हो।
जन बान्धव बन्धन हरता,
मन वच तन वन्दन करता॥

गुण दोषों को जाना है,
आत्म धर्म पहिचाना है।
शुक्लध्यान को ध्याया है,
उपादेय को पाया है॥

रवि को दीप दिखाना ज्यों,
तरु को पुष्प चढ़ाना ज्यों।
और जलधि को जल अर्पण,
वैसा मेरा गुण वर्णन॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥

ॐ ह्रीं षोडश दल कमलाधिपतये जगच्छान्ति कराय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय द्वितीय वलयोपरि पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्ति पथ

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

शान्ति कहाँ है? अन्दर में,
निर्मल ज्ञान समुन्दर में।
डुबकी लगाओ, डूबो नहीं,
ध्यान लगाओ, ऊबो नहीं॥

शान्ति नहीं संकल्पों में,
शान्ति नहीं जग जल्पों में।
शान्ति नहीं सुरकल्पों में,
शान्ति मिले जिन पद्मों में॥

शान्ति मिले जिनवचनों में,
मंगलमयी प्रवचनों में।
शान्ति मिले सामायिक में,
शान्ति मिले आवश्यक में॥

शान्ति मूर्ति हे शान्ति प्रभो,
शान्ति हमें दो, शान्ति विभो।
शान्ति शान्तरस वरषाओ,
आत्म शान्ति पथ दरशाओ॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥ 25॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं वचःस्तंभन कराय जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 25॥

प्रभुदर्शन

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

आप मिलो तो सुख मिलता,
नहीं मिलो तो दुख मिलता ।
जैसे सन्त समागम से,
जैसे सन्त गमन होते॥

नाथ आप जब आते हैं,
सारे दुख भग जाते हैं।
ज्यों सूरज का आना हो,
अंधकार का जाना हो ॥

ज्यों सूरज ने सब देखा,
पर क्या निशा तिमिर देखा ।
वैसा तुमने सब देखा,
मेरा दुख बस ना देखा ।

अंधकार न शेष यहाँ
तब दिनकर को दोष कहाँ ।
नाथ आपको दोष नहीं,
हमें रहा दुख लेश नहीं ॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥26॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं सेनास्तंभन कराय जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 26॥

शान्ति-शरण

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

तत्त्वज्ञान बिन शान्ति कहाँ ?
मिटती मन की भ्रान्ति कहाँ ?
तत्त्वज्ञान जब पाओगे,
आत्मशान्ति प्रकटाओगे॥

तत्त्वबोध कैसे पाऊँ?
वह उपाय मैं दरशाऊँ-
तत्त्वज्ञान जिनवाणी से,
वीतराग की वाणी से॥

जिन गुरु के उपदेशों से,
वा अभिप्राय विशेषों से।
सद्शास्त्रों के चिन्तन से,
बार-बार श्रुत मन्थन से॥

ज्यों भौरों को फूलों में
मिलता रस अनुकूलों में।
त्यों श्रुत गुरु से बोध मिले,
आत्मशान्ति का शोध मिले ॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥27॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं अग्निस्तम्भनकराय जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 27॥

शान्त स्वरूप

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

सोना देखे शान्ति मिले
चाँदी देखे शान्ति मिले।
धन देखे यदि शान्ति मिले,
समझो भ्रम में आप पले॥

सोना चाँदी पुद्गल कण,
पुद्गल कण में पुद्गल गुण।
पुद्गल द्रव्य निराला है,
आत्म द्रव्य सुख वाला है॥

धन पाने में करना श्रम,
शान्ति मानना केवल भ्रम।
पुद्गल देगा पुद्गल गुण,
चेतन देगा चेतन गुण॥

शान्त स्वरूप तुम्हारा है,
परम शान्ति भण्डारा है।
निज स्वरूप में आ जाओ,
शान्ति सुधारस पा जाओ॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥ 28॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं जलस्तम्भनकराय जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 28॥

समता का सौन्दर्य

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

सुख में दुख में समता हो,
शत्रु मित्र में समता हो।
वन उपवन में समता हो,
काँच-कनक में समता हो॥

लाभ-हानि में समता हो,
जन्म-मरण में समता हो।
धन-निर्धन में समता हो,
समता की दृढ़ क्षमता हो॥

समता हो संयोगों में,
समता रहे वियोगों में।
तो फिर पल-पल शान्ति मिले,
चेतन उपवन खिले-खिले।

समता नहीं तो साधु क्या?
ममता नहीं तो माता क्या ?
माँ का परिचय ममता है,
अपना परिचय समता है।

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥ 29॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं विषरोगादिविनाशक जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 29॥

प्रतिक्रमण

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

हे प्रभु! अपने पापों की,
दिये गये संतापों की।
निन्दा गर्हा करता हूँ,
आलोचन मैं करता हूँ॥

प्रतिक्रमण मैं करता हूँ,
पाप विमोचन करता हूँ।
आत्म शुद्धि पाने भगवन्,
स्वात्म बुद्धि पाने भगवन्॥

जाने में अंजाने में,
धरने और उठाने में।
इक दो ती चउ इन्द्रिय का,
अमन-समन पंचेन्द्रिय का॥

हे प्रभु! मुझसे घात हुआ,
आज मुझे यह ज्ञात हुआ।
क्षमा करो मुझको स्वामी,
करुणाकर अंतर्यामी॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥ 30॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं दुष्टमृगादिभयविनाशक जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 30॥

आलोचना

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

नाथ विराधन त्याग करूँ,
आराधन अनुराग धरूँ ।
त्याग करूँ अज्ञान सभी,
प्राप्त करूँ सद्ज्ञान सभी॥

मिथ्याचारित त्याग करूँ,
सम्यक्चारित हृदय धरूँ।
अकर्त्तव्य मैं नहीं करूँ,
कर्त्तव्यों को सदा करूँ॥

जो भाया वह ना भाऊँ,
ना भाया वह अब भाऊँ।
जो पाया वह ना पाऊँ,
ना पाया वह अब पाऊँ॥

हितकारी मैं हित मानूँ,
सुखकारी मैं सुख मानूँ।
तजूँ अहित जो दुखकारी,
भजूँ शान्ति जिन सुखकारी॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥ 31॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर परक्कमाणं लूता गर्भान्तिका बलि विनाशक जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ- जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 31॥

भक्त की लघुता

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

तुम चन्दन तो मैं पानी,
तव सुवास मुझमें आनी।
तुम बादल मैं नचता मोर,
तुम स्वाती मैं लघु चकोर॥

तुम दीपक तो मैं वाती,
ज्योति जले मम दिनराती।
तुम मोती तो मैं धागा,
तुमको पाकर मैं जागा॥

तुम स्वामी मैं दास अरे,
यही आत्मविश्वास भरे।
आप शान्ति रस कलश अहा,
सहज शान्तिरस विलस रहा॥

दर्शन पाकर हरष हुआ,
नीरस जीवन सरस हुआ।
मेरी अखियाँ बोल रही,
ये घड़ियाँ अनमोल रही॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥32॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुण वंभयारीणं भूतप्रेतादिभयविनाशक जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 32॥

मन का वैचित्र्य

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

मन ही कलह कराता है,
मन ही सुलह कराता है।
जो भी घटती घटना है,
निज मन की संघटना है॥

चित्त कषायाधीन रहे,
काय दुःख आधीन रहे।
जो कषाय परिहार करे,
तो फिर शान्ति विहार करे॥

जो भी ज्ञानाधीन हुआ,
वही परम स्वाधीन हुआ।
आत्मज्ञान उसका छलका,
दर्शन पाने जग ललका।

अतः शान्ति जिनचिन्तन में,
आत्म शान्ति गुण दर्शन में।
गुण सम्पद स्वीकार करूँ,
निज अवगुण परिहार करूँ॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥ 33॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं मनुष्यामरोपसर्गविनाशक जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥33॥

कषाय परिहार

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

बार-बार चिंतन करके,
सम्यक् श्रुत मन्थन करके।
आत्म भावना भा भाकर,
शुद्धातम को ध्या ध्याकर॥

प्रतिकूलों में कूलो ना।
सानुकूल में फूलो ना।
दोनों में समभाव रखो,
निर्मल आत्म स्वभाव रखो।

जो मन रंगा कषायों में,
विषयों में विकथाओं में।
वह न रमें स्वभावों में,
चिन्मय चेतन भावों में॥

ज्यों काले परिधान पड़े,
केसरिया रंग नहीं चढ़े।
अतः राग रुष भाव तजो,
वीतराग समभाव भजो॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥ 34॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेलोसहिपत्ताणं सर्वापमृत्युविनाशक जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 34॥

मोह परिहार

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

मोह रूप जादूगर ने,
आकर मानव के घर में।
अपना खेल दिखाया है,
कुटिल-जाल फैलाया है॥

आडम्बर के घेरे में,
माया लोभ अंधेरे में।
मिथ्यातम की गहन निशा,
भूल गया मैं दशा दिशा॥

अशुभोदयी अमावस में,
होकर के इन्द्रियवश में।
विषय कषायों में झूला,
आत्म लक्ष्य को मैं भूला॥

आज आपकी पूजन में,
अहो नाथ ! अन्तर्मन में।
कितनी उज्ज्वलता आई,
भाव सरलता प्रकटाई॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥ 35॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहिपत्ताणं जन्मान्तरवैरभावविनाशक जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ 35॥

चैतन्य कला

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

धर्म न भूलो सुख दुख में,
धर्म धरेगा शिव सुख में।
जैनधर्म को धारो तुम,
श्रमणधर्म स्वीकारो तुम॥

धर्म नहीं नीरस प्यारे,
सरस शक्तियाँ वह धारे।
छोड़ो कुरस कषायों का,
विषयों का विकथाओं का॥

निज विवेक अंजुलि द्वारा,
पियो शान्तरस की धारा।
धर्मामृत रस पान करो,
आत्मतत्त्व का ध्यान धरो॥

नाथ आपकी एक कला,
कर सकती है जगत् भला।
सिखलाओ चैतन्य कला,
दिखलाओ अब सिद्धशिला॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥36॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहिपत्ताणं अपस्मारप्रलापनचिंता विनाशक जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 36॥

शान्ति मन्त्र

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

मोह क्षोभ को करो विदा,
सम भावों में रहो सदा।
सम्यक् चारित्र धर्म कहा,
समता उसका मर्म कहा॥

जिस क्षण जैसे भाव रहे,
उस क्षण वैसे आप कहे।
शुभ-भावों में शुभ आतम,
शुद्ध-भाव में शुद्धातम॥

धर्म भाव में धर्मातम,
कर्म भाव में कर्मातम।
परम भाव में परमातम,
निज स्वभाव में सिद्धातम॥

जैसे-जैसे शुद्धि बढ़े,
वैसे-वैसे शान्ति बढ़े।
मन वच तन की शुद्धि परम,
शान्ति मन्त्र यह शान्तिप्रदम् ॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥ 37॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विद्वेसहिपत्ताणं गजमारी विनाशक जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 37॥

शान्ति तीर्थ

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

स्वात्मलब्धि का एकोपाय,
निर्मल रत्नत्रय को ध्याय।
जिन श्रद्धा सम्यग्दर्शन,
तत्त्व बोध, सद् ज्ञान सृजन॥

दर्श ज्ञान पर्यायों में,
उसको सभी विधाओं में।
नित निर्मल उपयोग रहे,
नूतन नवल प्रयोग रहे॥

सम्यक्चारित यह जानो,
रत्नत्रय निज में आनो।
जिसने पाया रत्नत्रय,
वह पायेगा छत्रत्रय॥

यह रत्नत्रय निधि मिले,
मोक्षमार्ग की विधि मिले।
नाथ आपके चरण कमल,
बने आचरण विमल अमल॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥38॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं मनोवाञ्छितसिद्धि प्रदायक जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥38॥

विश्व शान्ति का महानिलय

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

भाग्यवान मैं हूँ भगवन्!
पुण्यवान मैं हूँ भगवन्!
धन कुबेर-सा धन्य अहा!
मेरा कितना पुण्य अहा!

नाथ आपका द्वार मिला
मानो मुक्ति द्वार खुला।
अहो जिनालय मैं आया,
मानो सिद्धालय पाया॥

जहाँ आप तँह पाप नहीं,
जहाँ पाप तँह आप नहीं।
जहाँ आप का जाप नहीं,
पाप-ताप संताप वहीं॥

विश्वशान्ति का महानिलय,
शान्तिनाथ का चैत्यालय।
चिंताओं का करे विलय,
चित्त बना दे चैत्यालय॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥ 39॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोवलीणं गोमारी विनाशक जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥39॥

आत्मशान्ति के चार उपाय

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

आत्म शान्ति कैसे पाऊँ ?
इसका उत्तर मैं चाहूँ।
वचनामृत जल बरसाओ,
मुझे शान्ति पथ दरशाओ॥

निजता और सहजता हो,
समता और सरलता हो।
सहज शान्त रस पाओगे,
आत्म शान्ति प्रकटाओगे॥

निज में निज का रमना हो,
निज में निज का थमना हो।
स्वानुभूति कहलायेगी,
आत्मशान्ति प्रकटायेगी॥

स्वानुभूति रसमय रचना,
शुद्ध भाव की संरचना।
आत्मशान्ति का संविधान,
परम अहिंसा धर्म ध्यान॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥40॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचोवलीणं अजमारी विनाशक जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 40॥

आत्म परिचय

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

नाथ आप दिख जाते हैं,
कष्ट सभी मिट जाते हैं ।
किन्तु आपकी दृष्टि हटे,
कष्ट सहस्रों आन डटे ॥

मैं विकल्प की कीलों पर,
मूर्च्छाओं के टीलों पर।
चिन्तातुर हो बैठा हूँ,
फिर भी मद मैं ऐंठा हूँ॥

यह मैं हूँ, यह मेरा है,
यह तू है, यह तेरा है।
करता हूँ संकल्प विकल्प,
झूठी माया, झूठे जल्प॥

जो शाश्वत वह मेरा है,
ज्ञान दरश गुण डेरा है।
जो जो गुण सिद्धों में हैं,
वह गुण निज श्रद्धा में हैं॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥ 41॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायवलीणं महिषमारीविनाशक जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ 41॥

देह परिचय

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

जब तक तन में ममता है,
तब तक ही तन बनता है।
जब तू तन से मोह तजे,
तब तू आतम तत्त्व भजे॥

इस काया से क्या लेना,
रोग, शोक, दुख ही देना।
भोग, भोग से शान्त न हो,
रोग, रोग से अन्त न हो॥

आयुष घटती जाती है,
तृष्णा बढ़ती जाती है।
ओस बूँद सा नश्वर तन,
भोग, रोग–सम हे चेतन॥

इस तन से नित तप करले,
महामन्त्र का जप करले।
जीवन सफल बनायेगा,
महामोक्ष फल पायेगा॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥ 42॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं अष्टादशकुष्ठगण्डमालादिविनाशक जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ–जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ 42॥

दर्शन आनंद

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

जिन दर्शन जिसका छूटा,
भाग्योदय उसका रूठा।
जिसने जिनदर्शन पाया,
भाग्योदय उसका आया॥

नाथ आपके दर्शन से,
चरण कमल के वंदन से।
सब जीवों की विपदाएँ,
पल में अरे पला जाएँ॥

जैसे सूर्योदय होते,
किरण जाल प्रसरित होते।
घोर अमावस छट जाती,
पल भर में ही हट जाती॥

चरण कमल मैं अवनत हूँ,
सादर विनत सतत् नत हूँ।
धन्य-धन्य मैं धन्य अहा,
मेरा अनुपम पुण्य अहा॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥ 43॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिसवीणं सर्वशीतज्वरविनाशक जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥43॥

शान्ति वंदना

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

कर कमलों को जोड़ रखे।
भक्ति चदरिया ओढ़ रखे।
भक्त भक्ति रस भरे हुए।
विनय भाव उर धरे हुए।

जब अष्टांग किया वन्दन,
टूट गया भव का बन्धन।
कर्म बन्ध मानों छूटा,
शान्ति स्रोत निज में फूटा॥

त्रय प्रतिमा त्रय शासक की,
काम क्रोध मद नाशक सी
शान्ति कुन्थु अर स्वामी की,
वीतराग गुण ग्रामी की।

शान्ति नाथ का दर्श किया
आत्मशान्ति पा हर्ष हुआ ।
योग त्रय से नमन करूँ।
रोग त्रय का शमन करूँ॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥44॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुरसवीणं समस्तोपसर्गविनाशक जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥44॥

विश्व शान्ति कामना

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

ईति-भीति-दुर्भिक्ष न हो,
भोजन कहीं अभक्ष्य न हो।
प्रासुक शुद्धाहार रहे,
घर-घर शाकाहार रहे॥

कभी किसी को रोग न हो,
कहीं किसी को शोक न हो।
समय-समय जल बरषा हो,
सबका तन-मन हरषा हो॥

अखिल विश्व में प्रेम रहे,
राज राष्ट्र में क्षेम रहे।
गुणी जनों में मोद रहे,
मित्रों में आमोद रहे॥

बालक प्रज्ञावान बनें,
पालक गण धनवान बनें।
घर-घर धर्मायोजन हो,
सदा सफल संयोजन हो॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥45॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमिइसवीणं सर्व व्याधिविनाशक जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥45॥

विश्व कल्याण भावना

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

क्षायिक दान दिवैया तुम,
दे सकते जो मांगे हम।
महामना ना करें मना,
अतः मांगता मना-मना॥

रत्नत्रय का दान मिले,
बोधि समाधि निधान मिले।
साधु-संत सब स्वस्थ रहें,
श्रावक जन धर्मस्थ रहें॥

ब्राह्मण ब्रह्म तत्त्व जानें,
क्षत्रिय रक्षा व्रत ठानें।
वैश्य शुद्ध व्यापार करें,
शूद्र शुद्ध आचार धरें॥

खेतों में हरयाली हो,
तरु-शाखा फलवाली हो।
जन-जन में खुशहाली हो,
घर-घर में दीवाली हो॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥46॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणमहाणसाणं अक्षीणऋद्धिप्रदाय जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥46॥

रोग शमन संस्तुति

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

मनुज सर्प से डसा गया,
रग-रग में विष समा गया।
असह्य वेदना सता रही,
मौत निमंत्रण बता रही ॥

वह ज्यों नागदमनियाँ से,
गारुढ़ मुद्रा विद्या से।
मंत्र हवन जल सिंचन से,
या औषधि के सेवन से॥

या फिर उचित हवन करते,
मंगल मन्त्र श्रवण करते।
विष बाहर हो जाता है,
पूर्ण स्वस्थता पाता है॥

त्यों ही जिनपद वंदन से,
संस्तुतियों के अर्चन से।
सभी व्याधियाँ मिट जाती,
चमत्कार-सा प्रकटाती॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥ 47 ॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणबुद्धिरिसस्स राजपुरुषादिभयविनाशक जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 47 ॥

शान्ति प्रार्थना

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

धर्म प्रकाशक शान्ति प्रभो !
विघ्न विनाशक शान्ति प्रभो !
पुण्य विकासक शान्ति प्रभो !
पाप प्रणाशक शान्ति प्रभो !

आस्रव रोधक शान्ति प्रभो !
बंध विमोचक शान्ति प्रभो !
संवर दाता शान्ति प्रभो !
करो निर्जरा शान्ति प्रभो !

किया समर्पित अन्तर्मन,
किये समर्पित भाव वचन ।
किया समर्पित सविनय तन,
हुआ समर्पित मैं चेतन ॥

पाप – ताप – संताप हरो,
हे प्रभु ! निज सा आप करो ।
शान्ति प्रार्थना सुन लीजे,
आत्म शान्ति मुझको दीजे॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥48॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वसिद्धायदणाणं धनधान्यसमृद्धिरत्नत्रय प्रदाय जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 48॥

तृतीय वलय का पूर्णार्घ्य

शान्ति क्षेत्र

शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
आत्मशान्ति निज में प्रकटाने, शान्तिनाथ को ध्याता हूँ॥

सब जग से जब हार चुको,
तब आकर आहार रुको।
सिद्ध क्षेत्र आहार रहो,
शान्तिनाथ के द्वार रहो॥

शान्तिनाथ से शान्ति मिले,
करो वंदना भले-भले।
क्षेत्र बहोरीबंद कहा,
जहाँ शान्ति आनंद बहा॥

शान्तिनाथ जिन शान्ति करें,
जग जन मन की भ्रान्ति हरें।
क्षेत्र हस्तिनापुर की जय,
'शान्तिनाथ कल्याणक' त्रय ॥

सर्वप्रथम यह दान धरा,
दान तीर्थ कल्याण धरा ।
तीर्थ वंदना करो सदा,
शान्ति भक्ति न रुके कदा ॥

विश्वशान्ति की महाकामना, शुद्धभाव से भाता हूँ।
शान्तिनाथ मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अष्टचत्वारिंशद् दल कमलाधिपतये जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय तृतीय वलयोपरि पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप मंत्र

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जगच्छान्तिकराय सर्वोपद्रवशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

(108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा

शान्तिनाथ प्रभु शान्ति दो, हरो हमारे कष्ट।
तुम्हीं हमारे देवता, तुम्हीं हमारे इष्ट॥
शान्तिनाथ भगवान् की, अब गाऊँ जयमाल।
शान्ति भक्ति के साथ ही, गूंथूँ मैं गुणमाल॥

त्रोटक

जय शान्ति प्रभो! जय शान्ति जया! जय शान्ति प्रभो! जय शान्ति जया।
जय शान्ति प्रभो! शुभ नाम जया। जय शान्ति प्रभो! शिव धाम जया॥
जय शान्ति प्रभो! शुभ द्रव्य जया। जय शान्ति प्रभो! शुभक्षेत्र जया।
जय शान्ति प्रभो! शुभ काल जया। जय शान्ति प्रभो! शुभ भाव जया॥
जय धर्म प्रकाशक शान्ति जया, जय कर्म विनाशक शान्ति जया।
जय पुण्य विकासक शान्ति जया, जय पापप्रणाशक शान्ति जया ॥
जय आतम शान्ति प्रदायक हो, परमातम शान्ति विधायक हो।
जय शान्ति प्रवर्तक शान्ति करो, जय शान्ति विवर्द्धक शान्ति भरो॥
जय शान्ति प्रभो सुखदायक हो, जय शान्ति प्रभो शुभदायक हो ।
जय शान्ति प्रभो शिव नायक हो, जय शान्ति प्रभो सब लायक हो ॥
जय शान्ति प्रभो सब रोग हरो, जय शान्ति प्रभो जग शोक हरो।
जय शान्ति प्रभो मम राग हरो, जय शान्ति प्रभो मम द्वेष हरो॥
जय मोक्ष महाफल दान करो, जय शान्ति प्रभो वरदान वरो।
जयमाल रचूँ जयगान करूँ, गुणमाल रचूँ गुणगान करूँ ॥

जयमाल वही कहलाय सदा, जिसमें जय ही जय आय सदा।
जयकार करूँ जयकार करूँ जय हो, जय हो, जयकार करूँ॥
जय से जग पर जय मिलती है, जय से मन पर जय मिलती है।
जय से श्रुतज्ञान मिला करता, जय से शिवधाम मिला करता॥
शुभकार्य किया, शिवकार्य किया, निज शान्ति करो अनिवार्य किया।
शुभ क्षेत्र अहार शुभासन है, जय शान्ति प्रभो प्रतिमासन है।
जय शान्ति विधान रचा हमने, जय पूजन वंदन गा हमने।
जय शान्ति प्रभो गुणगान किया, निजशान्ति रसामृत पान किया॥

बोधि समाधि लाभ दो, शान्तिनाथ भगवान।
आत्मशान्ति का दान दे, करो जगत् कल्याण॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं आगतभय निवारणाय जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

आत्म शान्ति का लाभ दो, शान्त करो सब पाप।
शुद्ध भाव से मैं करूँ, शान्तिनाथ का जाप॥

इत्याशीर्वाद (पुष्पांजलि क्षिपेत्)

जो कुछ मेरे पास था, किया समर्पित नाथ।
अखिल विश्व में शान्ति हो, जोड़ूँ दोनों हाथ॥

प्रशस्ति

क्षेत्र बहोरीबंद से, नूतन शान्ति विधान।
पूर्ण रचा आहार में, पाकर शान्ति महान॥
सिद्ध क्षेत्र प्रख्यात है, पावन नाम अहार।
शान्तिनाथ विधान रच, हुआ पूर्ण त्यौहार॥
कार्तिक सुदी पूनम तिथि, अष्टाह्निक त्यौहार।
शान्तिनाथ के द्वार पर, मिला यही उपहार॥
वीर मुक्ति संवत रहा, पच्चिस सौ अड़तीस।
सूरि विभवसागर रचित, गुरु विराग आशीष॥

शान्तिनाथ (आरती)

भक्ति आरती, नृत्य आरती,
शान्तिनाथ! शान्तिनाथ! शान्तिनाथ की।
रत्न आरती स्वर्ण आरती,
शान्तिनाथ ! शान्तिनाथ! शान्तिनाथ की॥
तीर्थेश हे! चक्रेश हे! कामदेव कामजयी, शान्तिनाथ की।
भक्ति आरती, नृत्य आरती,
शान्तिनाथ! शान्तिनाथ! शान्तिनाथ की।
रत्न आरती स्वर्ण आरती,
शान्तिनाथ! शान्तिनाथ! शान्तिनाथ की॥
दिव्य मूर्ति हे! भव्य मूर्ति हे!
महामूरति श्री, शान्तिनाथ की
भक्ति आरती, नृत्य आरती,
शान्तिनाथ! शान्तिनाथ! शान्तिनाथ की।
रत्न आरती स्वर्ण आरती,
शान्तिनाथ! शान्तिनाथ! शान्तिनाथ की॥
शान्ति दान दो, शान्तिधाम दो,
विश्व शान्ति प्रदाता शान्तिनाथ की....
हस्तिनापुर, जन्म लिया है
श्री सम्मेदशिखर निर्वाण की।
भक्ति आरती, नृत्य आरती,
शान्तिनाथ! शान्तिनाथ! शान्तिनाथ की।
रत्न आरती स्वर्ण आरती,
शान्तिनाथ! शान्तिनाथ! शान्तिनाथ की॥
धन्य घड़ी ये, पुण्य घड़ी ये,
किया शान्तिविधान शान्ति नाथ जी।
भक्ति आरती, नृत्य आरती,
शान्तिनाथ! शान्तिनाथ! शान्तिनाथ की।
रत्न आरती स्वर्ण आरती,
शान्तिनाथ! शान्तिनाथ! शान्तिनाथ की॥

समाधि-भक्ति

तेरी छत्रच्छाया भगवन्! मेरे शिर पर हो।
मेरा अन्तिम मरणसमाधि, तेरे दर पर हो॥
जिनवाणी रसपान करूँ मैं, जिनवर को ध्याऊँ।
आर्यजनों की संगति पाऊँ, व्रत-संयम चाहूँ ॥
गुणीजनों के सद्गुण गाऊँ, जिनवर यह वर दो।
मेरा अन्तिम मरणसमाधि, तेरे दर पर हो॥
तेरी.....॥1॥
परनिन्दा न मुँह से निकले, मधुर वचन बोलूँ।
हृदय तराजू पर हितकारी, सम्भाषण तौलूँ॥
आत्म-तत्त्व की रहे भावना, भाव विमल भर दो।
मेरा अन्तिम मरणसमाधि, तेरे दर पर हो ॥
तेरी.....॥2॥
जिनशासन में प्रीति बढ़ाऊँ, मिथ्यापथ छोड़ूँ ।
निष्कलंक चैतन्य भावना, जिनमत से जोड़ूँ ॥
जन्म-जन्म में जैनधर्म, यह मिले कृपा कर दो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥
तेरी.....॥3॥
मरण समय गुरु, पाद-मूल हो सन्त समूह रहे।
जिनालयों में जिनवाणी की, गंगा नित्य बहे॥
भव-भव में संन्यास मरण हो, नाथ हाथ धर दो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥
तेरी.....॥4॥
बाल्यकाल से अब तक मैंने, जो सेवा की हो।
देना चाहो प्रभो! आप तो, बस इतना फल दो॥
श्वांस-श्वांस, अन्तिम श्वांसों में, णमोकार भर दो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥
तेरी.....॥5॥
विषय कषायों को मैं त्यागूँ, तजूँ परिग्रह को।
मोक्षमार्ग पर बढ़ता जाऊँ, नाथ अनुग्रह हो॥

तन पिंजर से मुझे निकालो, सिद्धालय घर दो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥
तेरी.....॥6॥
भद्रबाहु सम गुरु हमारे, हमें भद्रता दो।
रत्नत्रय संयम की शुचिता, हृदय सरलता दो॥
चन्द्रगुप्त सी गुरु सेवा का, पाठ हृदय भर दो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥
तेरी.....॥7॥
अशुभ न सोचूँ, अशुभ न चाहूँ, अशुभ नहीं देखूँ।
अशुभ सुनूँ ना, अशुभ कहूँ ना, अशुभ नहीं लेखूँ॥
शुभ चर्या हो, शुभ क्रिया हो, शुद्ध भाव भर दो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥
तेरी.....॥8॥
तेरे चरण कमल द्वय, जिनवर! रहे हृदय मेरे।
मेरा हृदय रहे सदा ही, चरणों में तेरे॥
पण्डित-पण्डित मरण हो मेरा, ऐसा अवसर दो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥
तेरी.....॥9॥
मैंने जो जो पाप किए हों, वह सब माफ करो।
खड़ा अदालत में हूँ स्वामी, अब इंसाफ करो॥
मेरे अपराधों को गुरुवर, आज क्षमा कर दो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥
तेरी.....॥10॥
दुःख नाश हो, कर्म नाश हो, बोधि-लाभ वर दो।
जिन गुण से प्रभु आप भरे हो, वह मुझमें भर दो॥
यही प्रार्थना, यही भावना, पूर्ण आप कर दो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥
तेरी.....॥11॥
तेरी छत्रच्छाया भगवन्! मेरे शिर पर हो।
मेरा अन्तिम मरणसमाधि, तेरे दर पर हो॥

पुण्यार्जक

कु. हर्षी जैन

के जन्मोत्सव पर

दादा-दादी :
श्रीमती मीना जैन धर्मपत्नी श्री अरविन्द जैन
पापा-मम्मी :
श्रीमती अतिशा जैन धर्मपत्नी श्री अभिषेक जैन
चाचा :
श्री अनुरोध जैन

पता :
79, गोमती कॉलोनी, भोपाल
मो. : 09424796622

॥ सारस्वत श्रमण ॥

आचार्य श्री 108 विभवसागरजी महाराज

पूर्व नाम	पण्डित अशोक कुमार जी जैन शास्त्री
जन्मस्थान	किसनपुरा (सागर) म.प्र.
जन्मतिथि	कार्तिक कृष्ण अमावस्या २०३३ तदनुकूल २३ अक्टूबर १९७६
पिता	श्रावकरत्न श्री लखमीचन्द जैन
माता	श्राविकारत्न श्रीमती गुलाबबाई जैन
शिक्षा	संस्कृत शास्त्री प्रथम वर्ष (इण्टर)
धार्मिक शिक्षा	धर्मशास्त्री द्वितीय वर्ष
शिक्षण संस्थान	श्री गणेशवर्णी दिगम्बर जैन महाविद्यालय मोराजी सागर म.प्र.
वैराग्य	९ अक्टूबर १९९४ को ब्र. व्रत लिया
क्षु. दीक्षा	२८ जनवरी १९९५ मंगलगिरी सागर म.प्र.
ऐलक दीक्षा	२३ फरवरी **१९९६** देवेन्द्रनगर (पन्ना) म.प्र.
मुनि दीक्षा	१४ दिसम्बर १९९८ अतिशय क्षेत्र बरासौ भिण्ड म.प्र.
दीक्षा गुरु	गणाचार्य १०८ श्री विरागसागर जी महाराज
आचार्य पद	३१ मार्च २००७ औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
विशेष	जैन आगम रूपी मानसरोवर के राजहंस की तरह झलक देने वाले प्रज्ञाश्रमण की प्रवचनशैली जन-जन द्वारा हृदयग्राह्य है।
कृतियां	अभी तक आचार्य श्री द्वारा ५० कृतियों की सृजना की गई है
अलंकरण	''सारस्वत-श्रमण'' एवं ''सारस्वत कवि''